# आभार / Acknowledgements

बाबा कैसेट के आधार पर विशुद्ध पुस्तक को बनाने व उसे जन-जन तक पहुँचाने में अनेकों मार्गी और WT लोगों ने तरह-तरह से सहायता दिया । उनके सहयोग को हम भूल नहीं सकते हैं । सबको हार्दिक धन्यवाद ।

इस ग्रन्थ को बनाने में बहुत-से बाबा ऑडियो कैसेट लगे हैं । वे सब कैसेट कहाँ से आए, कौन मदद किया, उसकी विस्तृत सूचना आनन्द वचनामृतम्, विशुद्ध, खण्ड १,२ में अङ्कित है । उन साधकों के सहयोग को हम भूल नहीं सकते हैं । सबको हार्दिक धन्यवाद ।

सद्‌गुरु बाबा के विशुद्ध प्रवचनों की इस पुस्तक को बनाने में मदद की बात को कौन कहे, सङ्कीर्ण दल-गत तुच्छ भाव-प्रवणता से प्रेरित तत्त्व इस ग्रन्थ के अस्तित्व के ही ख़िलाफ़ हैं । वर्तमान के ज़हरीले वातावरण की परवाह न करते हुए आचार्य रूपातीतानन्द अवधूत इस पुस्तक के प्रकाशक बने । दादा जी का यह साहस अनुकरणीय है । यह आगे आनेवाली पीढ़ी को भी प्रेरणा देता रहेगा कि विकट परिस्थिति में भी सत्य और धर्म का समर्थन करना चाहिए ।[(१)]

---

[१] इस मूल हिन्दी ग्रन्थ में यदि कोई त्रुटि रह गई है तो उसके लिए प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं । अर्थात् प्रवचन के कैसेट से प्रतिलेखन, दार्शनिक व्याख्या, वर्तनी, सम्पादन आदि में किसी भी प्रकार की गलती अगर रह गई है तो उसके लिए सम्पादक पूरी तरह से जिम्मेदार हैं, प्रकाशक नहीं । —सं०

एक विख्यात आनन्द मार्गी ने इस खण्ड को छपाने का सारा ख़र्च दिया । विषाक्त वातावरण के कारण उन्होंने गोपनीय रहने की इच्छा प्रकट की है । आर्थिक सहयोग के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद ।

ग्रन्थ निर्माण, प्रचार, वितरण आदि में सहयोग देनेवालों की सूची बहुत लम्बी है । उनमें से कुछ के नाम यहाँ लिखित हैं— श्री रञ्जन देव मुजफ्फरपुर, मुद्राङ्कन, प्रचार और वितरण विभाग प्रमुख (+91) 94712 81672, babasbooks@gmail.com । श्री धर्मवीर जी—अंग्रेज़ी शब्दों की वर्तनी जाँच । सहयोग देनेवालों की लम्बी सूची देखने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें— https://archive.org/details/Abhar-SS27-H

श्री श्रीश चन्द्र जी और रञ्जन जी बक्सर का पुराना सहयोग आज भी फलित हो रहा है । श्रीमती रचना बहन, श्री कल्याण सुन्दरम्, बक्सर—प्रतिदिन विशुद्ध पुस्तक प्रचार, आप्त वाक्य चित्र का निर्माण और प्रसारण ।

श्री अमृत लाल जी, श्रीमती सरोज बहन हिम्मतनगर, गुजरात; श्री दिनेश कौशिक, श्रीमती लता कौशिक, नागदा, मध्य प्रदेश; श्री देवेश जी, मुम्बई; श्री अशोक जी राँची; श्री भूपेन्द्र जी, बालासोर; श्री चन्द्रशेखर जी, गोरखपुर ।

उपरोक्त सभी मार्गी भाइयों और बहनों, और जिन मार्गी और कर्मी भाई-बहनों के नाम किसी कारण से छूट गए हैं

उन सभी को विशुद्ध पुस्तक निर्माण, प्रचार और वितरण आदि में मदद देने के लिए हार्दिक धन्यवाद ।

प्रतिपल-अनुपल परमपुरुष बाबा ने साक्षात् कृपा की है, उनके अहैतुकी कृपा बिना यह पुस्तक नहीं बन पाती । सब कुछ स्वयम् बाबा ने किया है । सतत साष्टाङ्ग प्रणाम उनके चरण कमलों में ।

* * * * *

जब बाबा-प्रवचनों के कैसेटों की चर्चा हो रही है, तो एक घटना की सूचना देना प्रासङ्गिक लगता है । घटना इस प्रकार की है कि एक बार John Doe ने धमकी दी कि कोई भी व्यष्टि अपना रिकॉर्ड किया हुआ बाबा के जनरल दर्शन या DMC के समय का कैसेट भी अपने पास नहीं रख सकता है । अगर किसी के पास वैसा कैसेट है तो उसको छीन लिया जाएगा । इस नियम को लागू करने के लिए John Doe ने अपने बास से आज्ञा लेकर आधा dozen VSS के साथ राँची में Dr. Singh के घर एक WT का निम्न श्रेणी का कैसेट छीनने पहुँच गए । Dr. Singh और Dr. Ramesh ने कैसेट देने से इनकार कर दिया । यह सङ्घर्ष आधी रात तक चला । बाद में John Doe निराश होकर आनन्द नगर लौट आए । और धर्म महासम्मेलन में झूठी अफवाह फैलाने लगे कि उन लोगों के पास खास कैसेट हैं, वे दे नहीं रहे हैं । इस तरह का मिथ्या प्रचार करके

उस समय John Doe ने अनेक लोगों को भ्रमित किया ।

इस समस्या का समाधान करने के लिए एक समझौता हुआ कि राँची के कैसेटों की मूल प्रति John Doe को दे दी जाए । और वे उसे जाँच करके वापस दे देंगे । याद रहे कि बाबा के जनरल दर्शन के अवसर पर उपस्थित मार्गियों और WT ने जो बाबा-प्रवचन अपने हाथ से रिकॉर्ड किया था, वह निम्न श्रेणी का कैसेट था, क्योंकि अनुमति न मिलने के कारण वह बाबा के डायस से दो सौ फीट की दूरी से, गुप्त रूप से रिकॉर्ड किया गया था इसलिए ध्वनि अस्पष्ट थी । जो भी हो, उसकी मूल प्रति John Doe को दे दी गई ।

दो महीना बाद, John Doe ने उस सामग्री को प्रकाशन विभाग को सौंप दिया । कैसेट जाँच करने से प्रकाशन in-charge को पता चल गया कि राँचीवाले कैसेट उनको नहीं चाहिए क्योंकि पहले से ही उनके पास हैं । और वे A-ग्रेड के हैं ।

इस पर John Doe ने राँचीवाले उस box को आनन्द नगर में लाकर जिसका box था उन्हें दे दिया । यह घटना मध्य १९९५ की है । बहुत दिनों तक वह box पूर्णज्ञानानन्द दादा के पास सुरक्षित था । इस पूरी घटना के बाद भी अपने महामन्यता मानसिक रोग के कारण John Doe सन्तुष्ट नहीं हुए । वे उस काल्पनिक कैसेट की खोज करते रहे, जिसका अस्तित्व इस धरती पर नहीं है, उसका अस्तित्व John Doe

के मन में ही है । John Doe आज भी उस काल्पनिक कैसेट को खोज ही रहे हैं ।